International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 14-06-2022, Accepted: 29-06-2022, Published: 16-07-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 31-34

जलवायु परिवर्तन और राजनीति

आशा राणा[1], कल्पना[2]

[1] विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, राधे हरि राजकीय पी0जी0 कालेज, कुमाऊ विश्वविद्यालय, काशीपुर, उतराखण्ड, भारत

[2] शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, राधे हरि राजकीय पी0जी0 कालेज, कुमाऊ विश्वविद्यालय, काशीपुर उतराखण्ड, भारत

सांराश

विश्व भर में जलवायु परिवर्तन का विषय सर्वविदित है। औद्योगीकरण की दौड में पर्यावरण की कीमत पर संसाधनो का दोहन और आर्थिक विकास जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण समस्याओं के लिए उतरदायी है । पिछले एक दशक में मानव जनित ग्रीन हाऊस गैसो के उत्सर्जन के परिणाम स्वरूप वैश्विक स्तर पर जो अप्रत्याशित जलवायु परिवर्तन हुआ है उसका परिस्थितिकी, जीव समुदाय तथा विश्व की सामाजिक आर्थिक प्रणालियों पर गम्भीर प्रभाव पडा है। क्षेत्रीय स्तर पर मौसम में जो उग्र बदलाव आ रहा है उसको देखते हुए वैशिवक तपन समस्त मानवता के लिए तबाही मचा सकती है। 1995 से 2006 की अवधि के 12 में से 11 वर्षो को 1850 के बाद से सबसे गर्म 11 वर्षो को शीर्ष पर रखा गया है। 2003 में गर्म हवाओं के कारण भारत जैसे विकासशील देश में 1500 लोग मारे गए। अर्कटिक के शाश्वत धुव्रीय हिमाशिखरों का तेजी से लुप्त होना और हिमालयीन हिमनदो के सुकडते जाने की घटनाऐ वैश्विक तपन के असाधारण लक्षणों को और भी विश्वसनीय बनाती जा रही है भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण के एक अध्ययन के अनुसार उतराखण्ड के विशालतम हिमालयीन हिमनदों में से एक गंगोत्री हिमनद वर्तमान 19 मीटर प्रतिवर्ष की औसत दर से सिकुडता जा रहा है। इस बात से इनकार नही किया जा सकता कि वर्तमान में भी जलवायु परिवर्तन वैश्विक व क्षेत्रीय समाज के समक्ष मौजूद सबसे बडी चुनौती है आंकडे दर्शाते है कि 19 वीं सदी के अन्त से अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 1.62^0C फारनहाइट बढ गया है इसके अतिरिक्त पिछले सदी से अब तक समुद्र के जल स्तर में भी लगभग 8 इंच की बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी है। आंकडे स्पष्ट करते है कि यह समय जलवायु परिवर्तन कि दिशा में गम्भीरता से विचार करने का है। प्रस्तुत शोध पत्र भी जलवायु परिवर्तन व राजनीति से सम्बंधित है इस शोध पत्र के माध्यम से जलवायु परिवर्तन कि चुनौतियाँ, वैश्विक तथा क्षेत्रीय स्तर राष्ट्र व राज्य से सम्बंधित सभी विषयों पर विचार प्रस्तुत किया जाएगा।

मूल शब्द: जलवायु परिवर्तन, राजनीति

प्रस्तावना

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य दशको, सदियों या उससे अधिक समय में होने वाली जनवायु में दीर्घकालिक परिवर्तन से है यही परिवर्तन मुख्य रूप से जीवाश्म ईधन जैसे– कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस को जलाने के कारण पृथ्वी के वातावरण में तेजी से बढ़ती ग्रीन हाउस गैसो के कारण होता है ये गर्म गैसे पृथ्वी की सतह में पहुँचकर पृथ्वी और महासागरो को गर्म कर रही है जिसके कारण समुद्र की धाराओ में बदलाव, तूफान के पैटर्न में बदलाव, बारिश में बदलाव, बर्फ का पिघलना, जंगलो में आग, अधिक चरम गर्मी, सूखा, समुद्र के जल स्तर में बढ़ाव आदि घटनाएँ सामने आ रही है इन सभी घटनाओ की प्रक्रिया को ही परिवर्तन कहा जाता है। जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक एंव मानवीय दोनो कारणो से हो रहा है जिससे मानवीय कारणो का अधिक योगदान है मानवीय गतिविधियों जैसे वनोन्मूलन, औद्योगिकरण, पशुपालन, कृषि में वृद्वि के लिए नाइट्रोजन उर्वरको का कृषि में उपयोग आदि क्रियाएँ जलवायु परिवर्तन के लिये मुख्य जिम्मेदार है जलवायु परिवर्तन की प्रक्रिया में कार्बन उत्सर्जन का विशेष महत्व है। जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल प्च्ब् के अनुसार 20वी शताब्दी के उत्तरार्द्व में उत्तरी गोलार्द्व का औसत तापमान विगत 500 वर्षो की तुलना में काफी अधिक था। पिछले दशक में अंटार्कटिका में बर्फ पिघलने की दर 3 गुना बढ़ गयी है विगत शताब्दी में वैश्विक समूह स्तर में लगभग 8 इंच की वृद्वि देखी गयी है। महासागरो का अम्लीकरण भी इसकी पुष्टि करता है महासागरो की ऊपरी परत द्वारा अवशोषित CO2 की मात्रा में लगभग प्रतिशत 2 बिलियन टन वृद्वि की बढोतरी हो रही है। भारत का तापमान भी वर्ष 1900 से वर्तमान तक लगभग 2^0C तक बढ चुका है। दिसम्बर 2009 में हुए कोपेन हेगेन सम्मेलन के पहले ही भारत ने कार्बन कटौती का लक्ष्य घोषित कर दिया था सरकार द्वारा इसके लिए 12वीं पचवर्षीय योजना 2012–17 में कुछ खास प्रावधान किये गये है।

अगर हम बात करे जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारक की तो उसमें सबसे पहमा नाम ग्रीन हाउस गैसो का आता है। इसे ग्रीन हाउस इफेक्ट भी कहते है। अब प्रश्न यह उठता है कि ग्रीन हाउस इफेक्ट होता क्या है। तो पृथ्वी का वातावरण जिस तरह से सूर्य की कुछ ऊर्जा को ग्रहण करता है उसे ग्रीन हाउस इफेक्ट कहते है। पुथ्वी के चारो ओर ग्रीन हाउस गैसो की एक परत होती है इन गैसो में कार्बन डाई आक्साइड, मीथेन, नाइट्रस आक्साइड गैस शामिल है। यें परत सूर्य

की आधिकतर ऊर्जा को सोख लेती है फिर उसे चारो दिशाओं में पहुँचा देती है ये ऊर्जा पृथ्वी की सतह तक पहुँचाती है जिसके कारण पृथ्वी की सतह गर्म रहती है, अगर ये सतह नही होती तो धरती 30^0C ज्यादा ठण्डी होती, मतलब साफ है ग्रीन हाउस गैसे न होती तो पृथ्वी पर जीवन नही होता । लेकिन मानव द्वारा उद्योगो और कृषि के जारिये जो गैसे वातावरण में छोड़ी जा रही है जिसे वैज्ञानिक भाषा में उत्सर्जन कहते है उससे ग्रीन हाउस गैस कि परत मोटी होती जा रही है ये परत अधिक ऊर्जा सोख रही है और धरती का तापमान बढा रही है इसी प्रक्रिया को आम तौर पर ग्लोबल वार्मिंग या जलवायु परिवर्तन कहा जाता है।

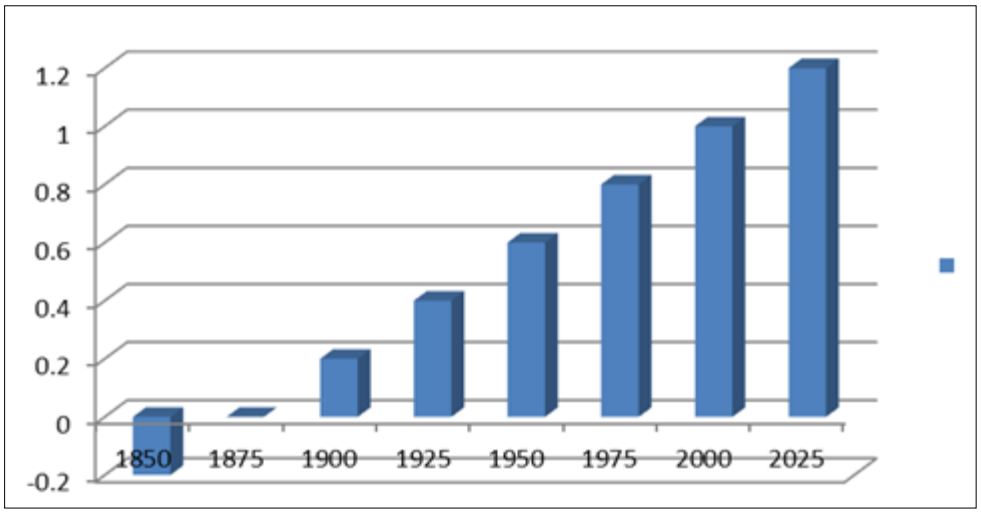

चित्र 1: 2011-2020 is the warmest decade on this Record (UNEP)

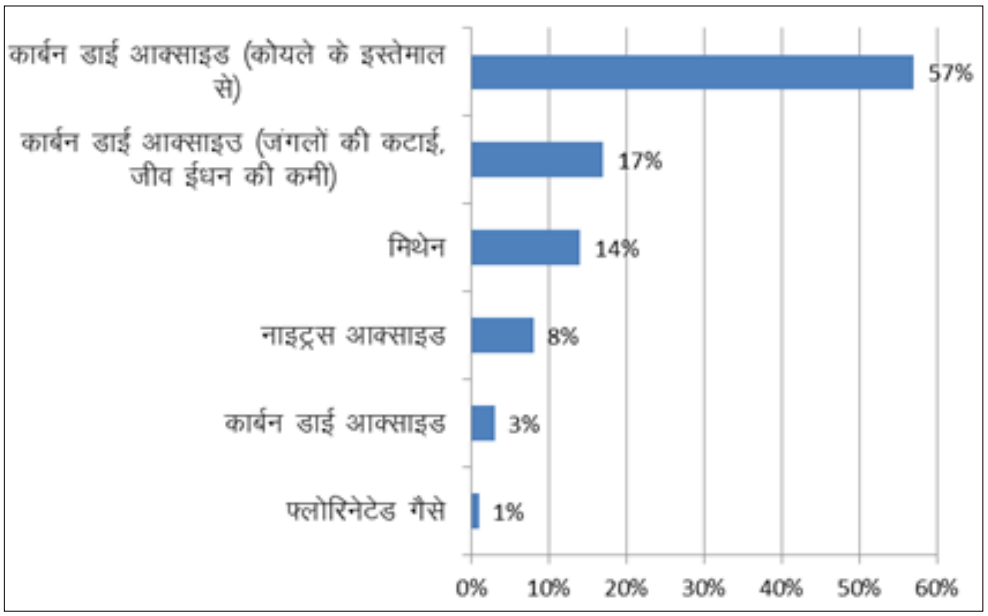

चित्र 2: ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जनः कितनी मात्रा में

जलवायु परिवर्तन व राजनीति

जलवायु परिवर्तन का क्षय या ह्रास एक अन्तराष्ट्रीय व राष्ट्रीय दोनो ही समस्या का विषय रहा है जनसख्यां विस्फोट, नगरीकरण, जल, प्रदुषण, धुआ, शोरगुल, रासायनिक प्रवाह, विज्ञान ओर तकनीक का अप्रत्याशित प्रसार, आदि वे कारण है जिनकी वजह से पर्यावरण का ह्रास हो रहा है विश्व के अधिंकाश भागों की समस्या अब भी निर्धनता और अज्ञान से सम्बधित है संयुक्त राष्ट्र के आरम्भिक दशको में पर्यावरण चिन्ताएँ यदा कदा ही अन्तराष्ट्रीय एजेंण्डा सूची पर आती थी इस संगठन के तत्सम्बंधी कार्य ने प्राकृतिक ससंधानो की खोज एंव उनके उपयोग पर जोर दिया साथ ही यह सुनिश्चत करना चाहा कि खासतौर विकासशील देश अपने स्वंय के प्राकृतिक संसधानों पर नियंत्रण बनायें रखने में समर्थ हो 1960 के दशक में समुद्री प्रदूषण विशेषकर तेल के विखराव से सम्बंधित समझोते हुए थे लेकिन वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के क्षय के बढते प्रमाण के कारण 1970 के दशक में अंतराष्ट्रीय समुदाय ने इस ग्रह की परिस्थितिक एवं मानव समाज पर विकास के प्रभाव पर उत्तरोत्तर चिंता व्यक्त की। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरणीय चिंताओं का एक प्रमुख पैरवीकार और टिकाऊ विकास (1987 ब्रटलैंड रिपोर्ट) का मुख्य प्रति पादक रहा है।

पर्यावरण और राजनीति का समबन्ध आरम्भ से ही महत्वपूर्ण रहा है। राजनीतिक विज्ञान के अधिकतम विचारकों ने शासन व समाज व्यवस्था के साथ–साथ पर्यावरणीय समस्याओं पर भी अपना ध्यान केन्द्रित किया है। यह विचार टामस हाब्स,

लॉक तथा रूसो के एक मिशन "प्रकृति की ओर लौटो" दर्शन में भी मिलते हैं। 18वीं व 19वीं दी में एक बार फिर प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता को जर्मनी में रोमटिसिज्म, ब्रिटेन में औद्योगिकरण के विरोध में विभिन्न चिंतक और कवि विलियम वाईस बर्थ, गौथा, कार्ल मार्क्स ने प्रकृति के प्रति संकल्पना मानव जीवन के केन्द्र में रखने की कोशिश की तथा यही 20वी शताब्दी में पर्यावरण चिन्तन का मुख्य आधार बन गया। 20वीं शताब्दी में कुछ महान चिंतक जैसे हेनरी थोरो, महात्मा गांधी, ई०एफ० शुमाकार, लियोपोल्ड ने हरित राजनीतिक चिन्तन की नींव रखी। 20वी सदी में 1960 के दशक में राहेल कार्सन की 'द साइलेंट स्प्रिंग' 1962, कीटनाशको और अन्य कृषि रसायनो के बढ़ते उपयोग वन्यजीव व मानव संसार को किये गये नुकसान की आलोचना को अक्सर विकासशील परिस्थितिकीय संकट पर ध्यान आकर्षित करने वाली पहली पुस्तक माना जाता है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में विभिन्न पर्यावरण संरक्षण आन्दोलन ने विश्व के विभिन्नर चिंतकों का ध्यान अपनी ओर खींचा जैसे सुन्दर लाल बहुगुणा, चण्डी प्रसाद भट्टर (चिपको आन्दोलन), मेधा पाटेकर (नर्मदा बचाओं आन्दोलन) आदि।

भारत एक विकासशील देश है और जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के प्रति न सिर्फ सचेत है, बल्कि सक्रिय भी है। भारत द्वारा इस दिशा में ठोस कदम उठाने की शुरुआत 2008 में तब की गई जब प्रधानमंत्री ने जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना की घोषणा की। इस योजना में सौर ऊर्जा उत्पादन पर जोर देने के अतिरिक्त सात अन्य परियोजनाओं की भी घोषणा की गई। ये अन्य सात मिशन इस प्रकार हैं– (1) ऊर्जा कार्यक्षमता में सुधार, (2) सतत् विकास, (3) जल संरक्षण, (4) हिमालय मिशन, (5) ग्रीन इण्डिया प्लान, (6) जलवायु परिवर्तन के लिए रणजनीतिक ज्ञान, (7) जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को सहने योग्य कृषि प्रणाली का विकास। दिसम्बर 2009 में हुए कोपेनहेन सम्मेलन के पहले ही भारत ने कार्बन कटौती का लक्ष्य घोषित कर दिया था इसके लिए सरकार द्वारा 12वी पंचवर्षीय योजना (2012–2017) में कुछ खास प्रावधान किये गये। साथ ही बिजली घरों में क्लीन कौल टैक्नोलाजी का इस्तेमाल भी किया गया ताकि कार्बन के उत्सर्जन को कम किया जा सके। 12वी पंचवर्षीय योजना के तहत वाहनों में फ्यूल एफीसिंएसी स्टैण्डर्ड को अनिवार्य बना दिया गया है और भी कई जैसे एनर्जी कंजर्वेशन बिंल्डिग कोड, ग्रीन इन्डिया मिशन, जलवायु अनुसंधान निधि आदि की भी शुरुआत की गई है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु वैश्विक प्रावधान

1. जलवायु परिवर्तन पर अन्तर सरकारी पैनल IPCC जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित वैज्ञानिक आकलन करने हेतु न्छक का एक निकाय है जिसकी सदस्य संख्या 195 देश है। इसे संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम न्छम्च और विश्व मौसम विभाग संगठन ॅडव्द्ध द्वारा 1988 में स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, इसके प्रभाव और भविष्य के सम्भावित जोखिमों के साथ–साथ अनुकूलन तथा जलवायु परिवर्तन को कम करने हेतु नीति निर्माताओं को रणनीति बनाने के लिए नियमित वैज्ञानिक आकलन प्रदान करना है। IPCC आकलन सभी स्तरों पर सरकारो को वैज्ञानिक सूचनाएं प्रदान करता है जिसका इस्तेमाल जलवायु के प्रति उदार नीति विकसित करने के लिए किया जा सकता है। प्च्ब्ब आकलन जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय वार्ताओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त अन्य कई सम्मेलन व संगठन हैं जो वैश्विक स्तर पर राष्ट्रों के मध्य होते रहते हैं जैसे–
2. **संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन UNFCCC**
   यह समझौता जून 1992 के पृथ्वी सम्मेलन के दौरान किया गया था। विभिन्न देशों द्वारा इस समझौते पर हस्ताक्षर 21 मार्च 1994 में किये गये। वर्ष 1995 से लगातार UNFCCC की वार्षिक बैठकों का आयोजन किया जा रहा है। इसके तहत ही वर्ष 1997 में बहुचर्चित क्योटो प्रोटोकॉल समझौता हुआ और विकसित देशों द्वारा (एनेल्स–1 में शामिल देश) ग्रीन हाउस गैसो को नियंत्रित करने के लिये लक्ष्य तय किया गया। इस समझौते के तहत 40 औद्योगिक देशों को अलग सूची एनेक्स–1 में रखा गया। UNFCC की वार्षिक बैठक को COP (कांफ्रेस ऑफ द पार्टीज) के नाम से जाना जाता है। प्रस्तावित सम्मेलन COP26 यूके के ग्लासगो में होने वाला है।

पेरिस समझौता

3. पर्यावरण सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए प्रति वर्ष 22 अफ्रैल 1970 से ही विश्व पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। इस दिन की महत्ता तब और बढ़ गयी जब 22 अप्रैल, 2016 को भारत सहित 130 से अधिक देशो ने कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने वाली ऐतिहासिक 'पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौता हस्ताक्षारित किया गया। फ्रांस की राजधानी में 30 नवम्बर से 11 दिसम्बर 2015 तक जलवायु परिवर्तन [COP21/CMP11] का आयोजन किया था। इस सम्मेलन के अन्तिम दिन लगभग 196 देशो ने कार्बन उत्सर्जन में तेजी से कमी लाने के लिए हर सम्भव प्रयास करने हेतु सहमति जताई थी। अभी हाल में 2019 में COP25 का आयोजन स्पेन की राजधानी मेड्रिट में किया गया था।
4. **अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन**
   अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन सौर ऊर्जा से सम्पन्न देशो का एक सन्धि आधारित अन्तर सरकारी संगठन है।
   अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरुआत भारत और फ्रांस ने 30 नवम्बर 2015 को पेरिस जलवायु सम्मेलन के दौरान की थी इसका मुख्यालय गुरुग्राम हरियाणा में है।
   अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन का प्रमुख उद्देश्यों में वैश्विक स्तर पर 1000 गीगावाट से अधिक सौर ऊर्जा प्राप्त करना और 2030 तक सौर ऊर्जा में निवेश के लिए लगभग 1000 बिलियन की राशि जुटाना है। इस गठबन्धन की पहली बैठक नई दिल्ली में हुई थी।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन न सिर्फ हमारे पर्यावरण बल्कि वृहद विकास के लिये भी खतरा है। वैश्विक तपन के कारण जिस प्रकार ग्लोबल वार्मिंग का स्तर लगातार बढ़ रहा है इसी से मूल्यांकित होता है कि इससे

उत्पन्न होने वाले खतरे को कम करने के खर्च की तुलना में जलवायु परिवर्तन से मानव कल्याण को होने वाला नुकसान ज्यादा है। बशर्ते हम जल्द–जल्द कदम उठाये। विश्व के सभी राष्ट्रों को वैश्विक व क्षेत्रीय स्तर पर अपनी विकास नीति बनाते समय कार्बन के प्रभाव के प्रति सजग एवं इससे प्रभावित विश्व को भी ध्यान में रखना होगा। इसलिये ये हमारे हित में है कि हम एक ठोस अनुकूल एजेड़ा तैयार करें। राष्ट्रीय स्तर पर जलवायु परिवर्तन की वास्तविक चुनौती यही है कि हम जलवायु से सम्बन्धित खतरों को विकास सम्बन्धी नीतियों और कार्यक्रमों में शामिल है और पर्यावरण व विकास के मध्य खड़ी सतत् विकास की प्रक्रिया, नियमों व लक्ष्यों का पूर्ण रूप से पालन करते रहें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जैन काला, आर०के०, समकालीन राजनीतिक सिद्धान्त, 2021, आरोही पब्लिकेशन, दिल्ली, पेज नं० 112
2. शर्मा, जी०एल०, सामाजिक मुद्दे, 2015, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पेज नं० 495
3. सुचिन्मयी रचना, समसमायिक राजनीतिक मुद्दे, 2016, रावत पब्लिकेशन।
4. बिस्वाल, तपन, मानवाधिकार, जेण्डर एवं पर्यावरण, 2006, वी०वी० प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. जोशी, शरद, जलवायु परिवर्तन और भारत, 2009, पैरवी प्रकाशन, लाजपत नगर, दिल्ली।
6. खत्री, हरीश कुमार, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एवं समकालीन राजनीतिक मुद्दे, कैलास पुस्तक भवन, भोपाल
7. https://www.downtoearth.org.in/hindistory/clinatechange/greenhouse-gas/india-slipped-one-place-to-tenth-position-in-climate-change-performance-index-2021-74551.
8. https://www.dristiias/com/hindi/to-the-points/paper3/climate-change-and-its-impact-on-economy-and-agriculture.
9. समैयार, अजीत कुमार, जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग एक परिचय, B.S.D.M.A.
10. कुमार, श्री एस, विजय, भारत की पर्यावरणीय अभिशासन संरचना का पुनर्गठन परिचर्चा पत्र, दी एनर्जी एण्ड रिसोर्सिस इन्सटीट्यूट टेरी, 2017